(June 2026).
***International Journal of Economic Perspectives*,*20*(06) 01 -08**
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

सतत विकास और विकसित भारत 2047 : पर्यावरणीय चुनौतियाँ

डॉ. सिद्धार्थ राव
सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान)
राजकीय नेहरू मेमोरियल महाविद्यालय, हनुमानगढ़

डॉ. भावना
सहायक आचार्य (इतिहास)
राजकीय नेहरू मेमोरियल महाविद्यालय, हनुमानगढ़

सारांश

सतत विकास (Sustainable Development) वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में एक अनिवार्य अवधारणा बन चुका है, विशेषकर तब जब विश्व जलवायु परिवर्तन, संसाधनों के अत्यधिक दोहन और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है। भारत ने वर्ष 2047 तक "विकसित भारत" बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है जो केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है बल्कि सामाजिक समावेशन, पर्यावरणीय संरक्षण और दीर्घकालिक स्थिरता पर भी आधारित है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य सतत विकास के सिद्धांतों के आलोक में भारत के विकास लक्ष्यों का विश्लेषण करना तथा पर्यावरणीय चुनौतियों की पहचान करना है जो इस लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक बन सकती हैं। अध्ययन में यह पाया गया है कि जलवायु परिवर्तन, वायु एवं जल प्रदूषण, जैव विविधता का ह्रास, भूमि क्षरण तथा प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएँ हैं जिनका समाधान किए बिना सतत विकास संभव नहीं है।

यह शोध पत्र भारत सरकार की विभिन्न नीतियों, जैसे राष्ट्रीय हरित नीति, नवीकरणीय ऊर्जा मिशन, स्वच्छ भारत अभियान और जल जीवन मिशन का विश्लेषण करता है और यह दर्शाता है कि इन पहलों के माध्यम से पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही अध्ययन यह भी इंगित करता है कि तकनीकी नवाचार, जन–जागरूकता, हरित अर्थव्यवस्था और सशक्त नीति–निर्माण के माध्यम से भारत अपने विकास लक्ष्य को सतत रूप से प्राप्त कर सकता है।

अंततः, यह शोध पत्र निष्कर्ष निकालता है कि "विकसित भारत 2047" का सपना तभी साकार हो सकता है जब आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित किया जाए तथा सतत विकास के सिद्धांतों को नीति और व्यवहार दोनों स्तरों पर प्रभावी रूप से लागू किया जाए।

मुख्य शब्दः सतत विकास (Sustainable Development), विकसित भारत 2047, पर्यावरणीय चुनौतियाँ, जलवायु परिवर्तन, हरित अर्थव्यवस्था, जैव विविधता संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यावरणीय नीति, संसाधन प्रबंधन, सतत विकास लक्ष्य (SDGs)

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास निरंतर प्रगति, संसाधनों के उपयोग और प्रकृति के साथ अंतःक्रिया की प्रक्रिया से जुड़ा रहा है। प्रारंभिक काल में मनुष्य की आवश्यकताएँ सीमित थीं और वह प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन यापन करता था किंतु औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और तकनीकी उन्नति के साथ विकास की गति तेज हुई और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन आरम्भ हो गया। इस अनियंत्रित विकास ने पर्यावरणीय असंतुलन, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता के ह्रास तथा भूमि क्षरण जैसी गंभीर समस्याओं को जन्म दिया। परिणामस्वरूप यह स्पष्ट हो गया कि केवल आर्थिक वृद्धि को विकास का मापदंड मानना पर्याप्त नहीं है बल्कि विकास की ऐसी अवधारणा की आवश्यकता है जो वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के हितों को भी सुरक्षित रख सके। इसी संदर्भ में "सतत विकास" (Sustainable Development) की अवधारणा का उद्भव हुआ जो आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन पर आधारित एक समग्र विकास मॉडल प्रस्तुत करती है।

© 2026 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 April 2026, Revised: 09 May 2026, Accepted: 25 May 2026,

(June 2026).
***International Journal of Economic Perspectives*,*20*(06) 01 -08**
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सतत विकास केवल एक वैचारिक अवधारणा नहीं बल्कि एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के माध्यम से विश्व समुदाय ने यह स्वीकार किया है कि गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वच्छ ऊर्जा, जल संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से निपटना जैसे लक्ष्य तभी संभव हैं जब विकास को सतत और समावेशी बनाया जाए। भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह चुनौती और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यहाँ एक ओर तेजी से आर्थिक विकास की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर विशाल जनसंख्या, सीमित संसाधन और पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याएँ भी मौजूद हैं।

भारत ने वर्ष 2047 तक "विकसित भारत" बनने का महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है जो देश की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर एक नए भारत की परिकल्पना को दर्शाता है। यह लक्ष्य केवल आर्थिक समृद्धि तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें सामाजिक न्याय, तकनीकी उन्नति, आत्मनिर्भरता और पर्यावरणीय संतुलन को भी समान रूप से महत्व दिया गया है। "विकसित भारत 2047" की अवधारणा इस बात पर बल देती है कि विकास ऐसा हो जो सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करे और साथ ही प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी सुनिश्चित करे। इस दृष्टिकोण में हरित ऊर्जा, सतत कृषि, स्वच्छ उद्योग, जल प्रबंधन और शहरी नियोजन जैसे क्षेत्रों में नवाचार और सुधार को प्राथमिकता दी जा रही है।

हालाँकि, इस लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में अनेक पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं जो विकास की गति और उसकी गुणवत्ता दोनों को प्रभावित करती हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा, सूखा और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ कृषि और आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं। इसके अतिरिक्त, वायु एवं जल प्रदूषण ने मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिक तंत्र को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। औद्योगिक अपशिष्ट, प्लास्टिक प्रदूषण और शहरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव लगातार बढ़ रहा है। जैव विविधता का क्षरण और वनों की कटाई भी पर्यावरणीय असंतुलन को बढ़ावा दे रहे हैं जिससे दीर्घकालिक विकास की संभावनाएँ संकट में पड़ सकती हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य सतत विकास के सिद्धांतों के आलोक में "विकसित भारत 2047" की अवधारणा का विश्लेषण करना तथा उन प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियों की पहचान करना है जो इस लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं। साथ ही, यह अध्ययन भारत सरकार की नीतियों और पहलों का मूल्यांकन करते हुए यह समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार हरित प्रौद्योगिकी, नीति सुधार, जन–जागरूकता और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है। इस प्रकार, यह प्रस्तावना न केवल विषय की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करती है बल्कि यह भी स्पष्ट करती है कि सतत विकास के बिना "विकसित भारत 2047" की परिकल्पना अधूरी है और इसके लिए संतुलित, समावेशी तथा पर्यावरण–संवेदनशील विकास मॉडल को अपनाना अत्यंत आवश्यक है।

सतत विकास : सैद्धांतिक आधार

सतत विकास (Sustainable Development) आधुनिक विकास विमर्श की एक केन्द्रीय अवधारणा है जिसका उद्देश्य आर्थिक प्रगति, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना है। इस अवधारणा का सैद्धांतिक आधार मुख्यतः 1987 में विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग (Brundtland Commission) की रिपोर्ट "Our Common Future" में प्रस्तुत किया गया जिसमें सतत विकास को इस रूप में परिभाषित किया गया कि "ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करे किंतु भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता से समझौता न करे।" इस परिभाषा में विकास की दीर्घकालिकता, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और अंतर–पीढ़ीगत समानता की स्पष्ट झलक मिलती है। अतः सतत विकास केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है बल्कि यह एक व्यापक, समावेशी और संतुलित विकास दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

सैद्धांतिक दृष्टि से सतत विकास तीन प्रमुख स्तंभों–आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय पर आधारित है जिन्हें प्रायः "Triple Bottom Line" कहा जाता है। आर्थिक आयाम का संबंध उत्पादन, आय वृद्धि और रोजगार सृजन से है जबकि सामाजिक आयाम समान अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय पर बल देता है। इसके विपरीत पर्यावरणीय आयाम प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन और प्रदूषण

© 2026 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 April 2026, Revised: 09 May 2026, Accepted: 25 May 2026,

(June 2026).
International Journal of Economic Perspectives,*20*(06) 01 -08
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

नियंत्रण से संबंधित है। इन तीनों आयामों के बीच संतुलन बनाए रखना ही सतत विकास का मूल उद्देश्य है क्योंकि इनमें से किसी एक की उपेक्षा विकास को असंतुलित और अस्थायी बना सकती है।

सतत विकास के सैद्धांतिक आधार में "अंतर–पीढ़ीगत समानता" और "अंतर–क्षेत्रीय समानता" की अवधारणाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अंतर–पीढ़ीगत समानता का अर्थ है कि वर्तमान पीढ़ी को संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करना चाहिए कि भविष्य की पीढ़ियों के अधिकार सुरक्षित रहें जबकि अंतर–क्षेत्रीय समानता वर्तमान समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संसाधनों और अवसरों के समान वितरण पर बल देती है। इसके अतिरिक्त, "सावधानी सिद्धांत" भी सतत विकास का एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार है जिसके अनुसार यदि किसी गतिविधि से पर्यावरण को संभावित हानि होने की आशंका हो तो उसके प्रभावों के पूर्ण वैज्ञानिक प्रमाण के अभाव में भी सावधानी बरतना आवश्यक है। इसी प्रकार "प्रदूषक भुगतान सिद्धांत" यह सुनिश्चित करता है कि जो व्यक्ति या संस्था पर्यावरण को प्रदूषित करती है, उसे उसके निवारण की लागत वहन करनी चाहिए।

सतत विकास के सैद्धांतिक ढाँचे में पारिस्थितिकीय अर्थशास्त्र (Ecological Economics) का भी महत्वपूर्ण योगदान है जो यह मानता है कि आर्थिक गतिविधियाँ पर्यावरणीय सीमाओं के भीतर ही संचालित होनी चाहिए। यह सिद्धांत इस विचार को प्रोत्साहित करता है कि प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं और उनका अंधाधुंध दोहन दीर्घकाल में आर्थिक और सामाजिक संकट को जन्म दे सकता है। इसी प्रकार, "हरित अर्थव्यवस्था" (Green Economy) की अवधारणा भी सतत विकास के सैद्धांतिक आधार को सुदृढ़ करती है, जिसमें कम कार्बन उत्सर्जन, संसाधन दक्षता और सामाजिक समावेशन को प्राथमिकता दी जाती है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2015 में निर्धारित 17 सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals – SDGs) भी सतत विकास के सैद्धांतिक आधार को व्यावहारिक रूप प्रदान करते हैं। ये लक्ष्य गरीबी उन्मूलन, भूख समाप्ति, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ जल और स्वच्छ ऊर्जा जैसे विभिन्न क्षेत्रों को समाहित करते हैं और वैश्विक स्तर पर एक समन्वित विकास मॉडल प्रस्तुत करते हैं। भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों ने इन लक्ष्यों को अपनाकर यह स्वीकार किया है कि सतत विकास के बिना दीर्घकालिक समृद्धि संभव नहीं है।

इस प्रकार, सतत विकास का सैद्धांतिक आधार बहुआयामी, समन्वित और दूरदर्शी है जो विकास को केवल आर्थिक वृद्धि के रूप में नहीं बल्कि एक समग्र प्रक्रिया के रूप में देखता है। यह सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि यदि विकास को दीर्घकाल तक बनाए रखना है तो उसे पर्यावरणीय सीमाओं के भीतर रहकर, सामाजिक समानता को सुनिश्चित करते हुए और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के साथ संचालित करना होगा। इसलिए, "विकसित भारत 2047" जैसे दीर्घकालिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सतत विकास के इन सैद्धांतिक आधारों को समझना और व्यवहार में लागू करना अत्यंत आवश्यक है।

विकसित भारत 2047 : लक्ष्य और रणनीतियाँ

"विकसित भारत 2047" भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर एक समृद्ध, सशक्त, आत्मनिर्भर और वैश्विक स्तर पर अग्रणी राष्ट्र के रूप में उभरने की परिकल्पना है। यह दृष्टिकोण केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें सामाजिक समावेशन, तकनीकी नवाचार, सुशासन, मानव विकास और पर्यावरणीय संतुलन जैसे बहुआयामी पहलुओं को समान महत्व दिया गया है। इस लक्ष्य का मूल उद्देश्य भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है, जहाँ उच्च जीवन स्तर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उन्नत स्वास्थ्य सेवाएँ, रोजगार के व्यापक अवसर और स्वच्छ एवं सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित हो। इस संदर्भ में "विकसित भारत 2047" एक समग्र विकास मॉडल प्रस्तुत करता है जो दीर्घकालिक स्थिरता और समावेशी प्रगति पर आधारित है।

विकसित भारत 2047 के प्रमुख लक्ष्यों में सबसे महत्वपूर्ण है आर्थिक सशक्तिकरण जिसके अंतर्गत भारत को विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल करना तथा प्रति व्यक्ति आय में उल्लेखनीय वृद्धि करना शामिल है। इसके लिए औद्योगिक विकास, निर्यात संवर्धन, स्टार्टअप और उद्यमिता को बढ़ावा देना, तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना आवश्यक है। इसके साथ ही, सामाजिक विकास भी इस दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय को प्राथमिकता दी गई है। गुणवत्तापूर्ण और सुलभ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से मानव संसाधन का विकास, तथा स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के द्वारा नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाना इस लक्ष्य का अभिन्न हिस्सा है।

© 2026 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 April 2026, Revised: 09 May 2026, Accepted: 25 May 2026,

(June 2026).
***International Journal of Economic Perspectives*,*20*(06) 01 -08**
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

इस परिकल्पना का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम है "आत्मनिर्भर भारत" (Self-Reliant India) जिसका उद्देश्य देश को उत्पादन, तकनीक और संसाधनों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना है। इसके अंतर्गत 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया', 'डिजिटल इंडिया' और 'स्किल इंडिया' जैसी पहलों के माध्यम से घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। डिजिटल प्रौद्योगिकी के विस्तार के माध्यम से प्रशासनिक पारदर्शिता, सेवा वितरण की दक्षता और आर्थिक गतिविधियों में तीव्रता लाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देकर भारत को एक ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है।

विकसित भारत 2047 की रणनीतियों में पर्यावरणीय सततता (Environmental Sustainability) को भी विशेष महत्व दिया गया है। हरित ऊर्जा के क्षेत्र में निवेश जैसे सौर और पवन ऊर्जा का विस्तार, जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करने और कार्बन उत्सर्जन को घटाने के लिए आवश्यक है। "राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन", "स्वच्छ भारत अभियान" और "जल जीवन मिशन" जैसी पहलें पर्यावरण संरक्षण और संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देती हैं। इसके साथ ही, सतत कृषि, जल प्रबंधन और शहरी नियोजन के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं।

सुदृढ़ अवसंरचना (Infrastructure Development) भी विकसित भारत 2047 की रणनीतियों का एक महत्वपूर्ण अंग है। स्मार्ट सिटी परियोजनाएँ, आधुनिक परिवहन नेटवर्क, डिजिटल कनेक्टिविटी और ऊर्जा अवसंरचना का विकास देश की आर्थिक प्रगति को गति प्रदान करता है। इसके साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच असमानता को कम किया जा सके और समावेशी विकास सुनिश्चित हो सके। "प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना" और "डिजिटल ग्राम" जैसी योजनाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

इसके अतिरिक्त, सुशासन और नीति–निर्माण की पारदर्शिता भी इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रभावी प्रशासन, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण, और जनभागीदारी को बढ़ावा देकर शासन प्रणाली को अधिक उत्तरदायी और पारदर्शी बनाया जा रहा है। नीति आयोग जैसे संस्थान दीर्घकालिक योजनाओं और रणनीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं जो देश के विकास पथ को दिशा प्रदान करते हैं।

अंततः, "विकसित भारत 2047" की अवधारणा एक समन्वित और दूरदर्शी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें आर्थिक प्रगति, सामाजिक न्याय, तकनीकी नवाचार और पर्यावरणीय संतुलन का संतुलित समावेश है। यह स्पष्ट करता है कि यदि भारत को वैश्विक स्तर पर एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है तो विकास की रणनीतियों को समावेशी, सतत और नवोन्मेषी बनाना होगा। इस प्रकार, विकसित भारत 2047 केवल एक लक्ष्य नहीं बल्कि एक दीर्घकालिक राष्ट्रीय संकल्प है, जिसकी सफलता सामूहिक प्रयासों, प्रभावी नीतियों और सतत विकास के सिद्धांतों के समुचित क्रियान्वयन पर निर्भर करती है।

पर्यावरणीय चुनौतियाँ

वर्तमान समय में पर्यावरणीय चुनौतियाँ वैश्विक और राष्ट्रीय विकास के मार्ग में सबसे गंभीर बाधाओं में से एक बनकर उभरी हैं। विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देश के लिए जहाँ एक ओर तीव्र आर्थिक विकास की आवश्यकता है और दूसरी ओर विशाल जनसंख्या तथा सीमित प्राकृतिक संसाधनों का दबाव है, वहाँ पर्यावरणीय समस्याएँ और अधिक जटिल हो जाती हैं। "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इन चुनौतियों को समझना और उनका प्रभावी समाधान खोजना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि पर्यावरणीय असंतुलन न केवल प्राकृतिक संसाधनों को प्रभावित करता है बल्कि मानव स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग और समग्र आर्थिक प्रगति पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

सबसे प्रमुख पर्यावरणीय चुनौती जलवायु परिवर्तन (Climate Change) है जो वैश्विक तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और चरम मौसम घटनाओं के रूप में प्रकट हो रही है। भारत में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विशेष रूप से कृषि क्षेत्र पर देखा जा रहा है जहाँ मानसून की अनिश्चितता और तापमान में वृद्धि के कारण उत्पादन में अस्थिरता आ रही है। इसके साथ ही हिमालयी क्षेत्रों में ग्लेशियरों का पिघलना और समुद्र–तटीय क्षेत्रों में समुद्र स्तर का बढ़ना दीर्घकालिक पर्यावरणीय संकट को जन्म दे रहा है।

© 2026 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 April 2026, Revised: 09 May 2026, Accepted: 25 May 2026,

(June 2026).
International Journal of Economic Perspectives,*20*(06) 01 -08
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

वायु प्रदूषण (Air Pollution) भी एक गंभीर समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है। शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, वाहनों की बढ़ती संख्या और जीवाश्म ईंधनों के अत्यधिक उपयोग के कारण वायु की गुणवत्ता में लगातार गिरावट हो रही है। इसका सीधा प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है जिससे श्वसन संबंधी रोग, हृदय रोग और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ रही हैं। भारत के कई महानगर विश्व के सबसे प्रदूषित शहरों में शामिल हो चुके हैं जो इस समस्या की गंभीरता को दर्शाता है।

जल प्रदूषण (Water Pollution) और जल संकट भी प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियों में शामिल हैं। औद्योगिक अपशिष्ट, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग तथा घरेलू सीवेज के उचित प्रबंधन का अभाव जल स्रोतों को प्रदूषित कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप पीने योग्य स्वच्छ जल की उपलब्धता में कमी आ रही है और जलजनित रोगों का खतरा बढ़ रहा है। साथ ही, भूजल का अत्यधिक दोहन भी जल संकट को और गहरा बना रहा है जिससे भविष्य में जल सुरक्षा पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है।

जैव विविधता का ह्रास (Loss of Biodiversity) भी एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय समस्या है। वनों की कटाई, शहरी विस्तार, औद्योगिक परियोजनाएँ और जलवायु परिवर्तन के कारण अनेक वन्य जीव और पौधों की प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। जैव विविधता का संतुलन बिगड़ने से पारिस्थितिक तंत्र कमजोर होता है जिससे प्राकृतिक आपदाओं की संभावना बढ़ जाती है और मानव जीवन भी प्रभावित होता है।

भूमि क्षरण (Land Degradation) और मरुस्थलीकरण (Desertification) भी भारत के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। अत्यधिक कृषि, रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग, वनों की कटाई और अनियंत्रित चराई के कारण भूमि की उर्वरता घट रही है। इससे कृषि उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और खाद्य सुरक्षा भी प्रभावित होती है। विशेष रूप से राजस्थान और अन्य शुष्क क्षेत्रों में मरुस्थलीकरण की समस्या तेजी से बढ़ रही है जो सतत विकास के लिए एक बड़ी चुनौती है।

इसके अतिरिक्त, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन भी पर्यावरणीय संकट को बढ़ा रहा है। खनन, औद्योगिक विस्तार और ऊर्जा की बढ़ती मांग के कारण वन, जल और खनिज संसाधनों का अत्यधिक उपयोग हो रहा है जिससे पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ रहा है। प्लास्टिक प्रदूषण और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएँ भी शहरी क्षेत्रों में गंभीर रूप धारण कर चुकी हैं जिससे भूमि और जल दोनों प्रदूषित हो रहे हैं।

इस प्रकार, पर्यावरणीय चुनौतियाँ बहुआयामी और जटिल हैं जो केवल प्राकृतिक संसाधनों तक सीमित नहीं हैं बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास को भी प्रभावित करती हैं। "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य को साकार करने के लिए इन चुनौतियों का समग्र और सतत समाधान आवश्यक है। इसके लिए न केवल प्रभावी नीतियों और तकनीकी नवाचार की आवश्यकता है बल्कि जन–जागरूकता, सामुदायिक भागीदारी और जिम्मेदार व्यवहार भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अतः यह स्पष्ट है कि पर्यावरणीय संतुलन बनाए बिना सतत और समावेशी विकास की कल्पना संभव नहीं है।

भारत सरकार की पहलें और नीतियाँ

भारत सरकार ने "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण नीतियाँ और पहलें लागू की हैं। इन नीतियों का उद्देश्य आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संतुलन के बीच समन्वय स्थापित करना है ताकि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हुए दीर्घकालिक विकास सुनिश्चित किया जा सके। वर्तमान समय में सरकार की रणनीति "हरित विकास" (Green Growth) पर आधारित है जिसमें स्वच्छ ऊर्जा, संसाधनों का दक्ष उपयोग, प्रदूषण नियंत्रण और पारिस्थितिक संतुलन को प्राथमिकता दी जा रही है।

सबसे प्रमुख पहल "राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना" (National Action Plan on Climate Change – NAPCC) है जिसके अंतर्गत आठ राष्ट्रीय मिशनों के माध्यम से जलवायु परिवर्तन से निपटने की रणनीति तैयार की गई है। इनमें "राष्ट्रीय सौर मिशन", "राष्ट्रीय जल मिशन", "ऊर्जा दक्षता मिशन" और "हरित भारत मिशन" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन मिशनों का उद्देश्य नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना, जल संसाधनों का संरक्षण करना, ऊर्जा की खपत को कम करना और वनों का विस्तार करना है। इस योजना के माध्यम से भारत ने वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध अपनी प्रतिबद्धता को भी स्पष्ट किया है।

© 2026 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 April 2026, Revised: 09 May 2026, Accepted: 25 May 2026,

(June 2026).
***International Journal of Economic Perspectives*,*20*(06) 01 -08**
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। "राष्ट्रीय सौर मिशन" (National Solar Mission) के अंतर्गत सौर ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम हो सके। इसके साथ ही "राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन" (National Green Hydrogen Mission) के माध्यम से स्वच्छ ईंधन के रूप में हाइड्रोजन के उपयोग को प्रोत्साहित किया जा रहा है। पवन ऊर्जा, बायो–एनर्जी और जल विद्युत परियोजनाओं का विस्तार भी इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं जो भारत को स्वच्छ ऊर्जा की ओर अग्रसर कर रहे हैं।

स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में "स्वच्छ भारत अभियान" एक क्रांतिकारी पहल के रूप में सामने आया है। इस अभियान का उद्देश्य खुले में शौच की प्रथा को समाप्त करना, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ करना और स्वच्छता के प्रति जन–जागरूकता बढ़ाना है। इसी प्रकार, "जल जीवन मिशन" का लक्ष्य प्रत्येक ग्रामीण घर तक सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना है जिससे जलजनित रोगों में कमी लाई जा सके और जीवन स्तर में सुधार हो।

पर्यावरण संरक्षण के लिए "राष्ट्रीय हरित नीति" (National Environment Policy) और "वन संरक्षण अधिनियम" (Forest Conservation Act) जैसी नीतियाँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन नीतियों के माध्यम से वनों की कटाई पर नियंत्रण, जैव विविधता का संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, "राष्ट्रीय जैव विविधता कार्य योजना" (National Biodiversity Action Plan) के अंतर्गत जैव विविधता के संरक्षण और उसके सतत उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

भारत सरकार ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया है। पेरिस समझौता के तहत भारत ने अपने कार्बन उत्सर्जन को कम करने, नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ाने और कार्बन सिंक (वन क्षेत्र) का विस्तार करने के लक्ष्य निर्धारित किए हैं। इसके साथ ही "अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन" की स्थापना में भारत की अग्रणी भूमिका रही है, जिसका उद्देश्य सौर ऊर्जा के उपयोग को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना है।

शहरी विकास के संदर्भ में "स्मार्ट सिटी मिशन" और "अटल मिशन फॉर रीजुवेनेशन एंड अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन" (AMRUT) जैसी योजनाएँ पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ शहरों के निर्माण पर बल देती हैं। इन योजनाओं के अंतर्गत स्वच्छ जल, हरित क्षेत्र, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और ऊर्जा दक्षता जैसे पहलुओं को प्राथमिकता दी जा रही है। इसके अतिरिक्त, "राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम" के माध्यम से वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न शहरों में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं।

इस प्रकार, भारत सरकार की विभिन्न नीतियाँ और पहलें यह दर्शाती हैं कि देश सतत विकास के मार्ग पर अग्रसर है। हालाँकि इन नीतियों की सफलता उनके प्रभावी क्रियान्वयन, जनभागीदारी और निरंतर निगरानी पर निर्भर करती है। यदि इन पहलों को समुचित रूप से लागू किया जाए, तो वे न केवल पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान कर सकती हैं बल्कि "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य को भी साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

सतत विकास हेतु समाधान और सुझाव

सतत विकास की अवधारणा को व्यवहार में लागू करने के लिए बहुआयामी, समन्वित और दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है, जिसमें सरकार, निजी क्षेत्र और समाज सभी की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो। "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि विकास की रणनीतियाँ केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित न रहकर पर्यावरणीय संरक्षण और सामाजिक समावेशन को भी समान रूप से महत्व दें। इस संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण समाधान हरित प्रौद्योगिकी (Green Technology) के विकास और उपयोग में निहित है। स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर, पवन और जल ऊर्जा को बढ़ावा देकर जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम किया जा सकता है जिससे कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी और पर्यावरणीय संतुलन बना रहेगा। इसके साथ ही, ऊर्जा दक्षता को बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग उद्योगों और घरेलू स्तर पर किया जाना चाहिए।

पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में जन–जागरूकता और पर्यावरण शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब तक आम नागरिकों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना विकसित

© 2026 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 April 2026, Revised: 09 May 2026, Accepted: 25 May 2026,

(June 2026).
International Journal of Economic Perspectives,*20*(06) 01 -08
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

नहीं होगी, तब तक नीतियों का प्रभाव सीमित रहेगा। विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में पर्यावरणीय शिक्षा को अनिवार्य बनाकर भावी पीढ़ी को सतत विकास के मूल्यों से परिचित कराया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, मीडिया और सामाजिक अभियानों के माध्यम से लोगों को जल संरक्षण, स्वच्छता, वृक्षारोपण और अपशिष्ट प्रबंधन के प्रति जागरूक किया जा सकता है।

नीति–निर्माण और उसके प्रभावी क्रियान्वयन में सुधार भी सतत विकास के लिए आवश्यक है। सरकार को ऐसी नीतियाँ बनानी चाहिए जो दीर्घकालिक दृष्टिकोण पर आधारित हों और जिनमें पर्यावरणीय प्रभावों का समुचित मूल्यांकन किया गया हो। "सावधानी सिद्धांत" और "प्रदूषक भुगतान सिद्धांत" जैसे सिद्धांतों को नीति–निर्माण में प्रभावी रूप से लागू करना चाहिए, ताकि पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाली गतिविधियों पर नियंत्रण रखा जा सके। इसके साथ ही, निगरानी तंत्र को मजबूत बनाना आवश्यक है जिससे नीतियों के क्रियान्वयन की नियमित समीक्षा हो सके और आवश्यक सुधार किए जा सकें।

निजी क्षेत्र और उद्योगों की भागीदारी भी सतत विकास के लिए अनिवार्य है। उद्योगों को "कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व" (CSR) के तहत पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक विकास की गतिविधियों में योगदान देना चाहिए। हरित उत्पादन प्रक्रियाओं (Green Production Processes), अपशिष्ट पुनर्चक्रण (Recycling) और संसाधनों के दक्ष उपयोग को अपनाकर उद्योग पर्यावरणीय प्रभाव को कम कर सकते हैं। इसके साथ ही, "ग्रीन फाइनेंस" और "सस्टेनेबल इन्वेस्टमेंट" को बढ़ावा देकर पर्यावरण–अनुकूल परियोजनाओं को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

कृषि क्षेत्र में सतत विकास के लिए जैविक खेती (Organic Farming), जल संरक्षण तकनीकों और फसल विविधीकरण को अपनाना आवश्यक है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग को नियंत्रित कर प्राकृतिक संसाधनों की गुणवत्ता को बनाए रखा जा सकता है। माइक्रो–इरिगेशन तकनीकों जैसे ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई का उपयोग जल की बचत में सहायक हो सकता है। इसके साथ ही, किसानों को आधुनिक और पर्यावरण–अनुकूल कृषि पद्धतियों के बारे में प्रशिक्षण प्रदान करना भी आवश्यक है।

शहरी क्षेत्रों में सतत विकास के लिए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, सार्वजनिक परिवहन का विकास, हरित भवन (Green Buildings) और स्मार्ट सिटी अवधारणा को बढ़ावा देना चाहिए। प्लास्टिक के उपयोग को कम करना, पुनरू उपयोग और पुनर्चक्रण को प्रोत्साहित करना तथा स्वच्छ ऊर्जा आधारित परिवहन प्रणाली विकसित करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, जल संसाधनों के संरक्षण के लिए वर्षा जल संचयन (Rainwater Harvesting) और जल पुनर्चक्रण (Water Recycling) जैसी तकनीकों को व्यापक स्तर पर अपनाना चाहिए।

अंततः, सतत विकास के लिए सामुदायिक भागीदारी और जन–सहयोग अत्यंत आवश्यक है। स्थानीय समुदायों को पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में शामिल कर उन्हें सशक्त बनाना चाहिए, ताकि वे अपने क्षेत्र की समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकें। गैर–सरकारी संगठन (NGOs) और स्वैच्छिक संस्थाएँ भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इस प्रकार, यदि सभी स्तरों पर समन्वित प्रयास किए जाएँ तो सतत विकास के लक्ष्य को प्रभावी रूप से प्राप्त किया जा सकता है और "विकसित भारत 2047" का सपना साकार हो सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से स्थापित होता है कि "विकसित भारत 2047" की परिकल्पना केवल आर्थिक उन्नति का लक्ष्य नहीं है बल्कि यह एक समग्र और संतुलित विकास दृष्टिकोण है जिसमें सामाजिक समावेशन, तकनीकी प्रगति और पर्यावरणीय संरक्षण को समान महत्व दिया गया है। सतत विकास के सिद्धांत इस दृष्टिकोण के केंद्र में स्थित हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि विकास की प्रक्रिया वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों और संसाधनों की रक्षा भी करे। अतः यह कहा जा सकता है कि सतत विकास के बिना विकसित भारत की कल्पना अधूरी और अस्थायी सिद्ध होगी।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि भारत के समक्ष पर्यावरणीय चुनौतियाँ अत्यंत गंभीर और बहुआयामी हैं जिनमें जलवायु परिवर्तन, वायु एवं जल प्रदूषण, जैव विविधता का ह्रास, भूमि क्षरण तथा प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन प्रमुख हैं। ये चुनौतियाँ न केवल पर्यावरणीय संतुलन को प्रभावित करती हैं बल्कि कृषि, स्वास्थ्य, उद्योग और समग्र आर्थिक विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। यदि इन समस्याओं का

© 2026 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 April 2026, Revised: 09 May 2026, Accepted: 25 May 2026,

समय रहते प्रभावी समाधान नहीं किया गया, तो यह "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं।

हालाँकि, भारत सरकार द्वारा लागू की गई विभिन्न नीतियाँ और पहलें जैसे नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण कार्यक्रम और हरित विकास रणनीतियाँ यह दर्शाती हैं कि देश सतत विकास के मार्ग पर अग्रसर है। इन पहलों के माध्यम से पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने और संसाधनों के सतत उपयोग को सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है किंतु इन नीतियों की सफलता उनके प्रभावी क्रियान्वयन, पारदर्शिता और जनभागीदारी पर निर्भर करती है जिसके लिए सभी हितधारकों का सहयोग आवश्यक है।

अंततः, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि "विकसित भारत 2047" का लक्ष्य तभी साकार हो सकता है जब विकास की प्रक्रिया को पर्यावरण के साथ संतुलित रखते हुए आगे बढ़ाया जाए। इसके लिए हरित प्रौद्योगिकी का उपयोग, पर्यावरणीय शिक्षा का प्रसार, नीति–निर्माण में सुधार, निजी क्षेत्र की भागीदारी और सामुदायिक सहयोग जैसे उपाय अत्यंत आवश्यक हैं। यह एक सामूहिक प्रयास है जिसमें सरकार, उद्योग, समाज और प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भूमिका अनिवार्य है। यदि इन सभी स्तरों पर समन्वित और सतत प्रयास किए जाएँ तो भारत न केवल एक विकसित राष्ट्र के रूप में उभर सकता है बल्कि वैश्विक स्तर पर सतत विकास का एक आदर्श मॉडल भी प्रस्तुत कर सकता है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. सी. भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास और नियोजन. नई दिल्ली : एस. चंद एंड कंपनी, 2018।
2. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद. राजस्थान का इतिहास. अजमेर : राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2015।
3. कश्यप, सुभाष. भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था. नई दिल्ली : यूनिवर्सिटी प्रकाशन, 2020।
4. भारत सरकार, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय. राष्ट्रीय पर्यावरण नीति, 2006. नई दिल्ली : भारत सरकार, 2006।
5. भारत सरकार, नीति आयोग. सतत विकास लक्ष्य (SDGs) भारत सूचकांक रिपोर्ट. नई दिल्ली : नीति आयोग, 2021।
6. संयुक्त राष्ट्र. हमारा साझा भविष्य (Our Common Future). जिनेवा : विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग, 1987।
7. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP). सतत विकास लक्ष्य : 2030 एजेंडा. न्यूयॉर्क : UNDP, 2015।
8. शर्मा, पी. डी. पर्यावरण अध्ययन. मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन्स, 2019।
9. सिंह, आर. बी. पर्यावरण और सतत विकास. नई दिल्ली : अवध पब्लिशिंग हाउस, 2017।
10. भारत सरकार. आर्थिक सर्वेक्षण 2022–23. नई दिल्ली : वित्त मंत्रालय, 2023।
11. विश्व बैंक. विश्व विकास रिपोर्ट. वाशिंगटन डी.सी. : विश्व बैंक, 2020।
12. इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी (IEA). विश्व ऊर्जा आउटलुक. पेरिस : IEA, 2021।

© 2026 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 April 2026, Revised: 09 May 2026, Accepted: 25 May 2026,